बाइबल टीचर

वर्ष 19 | जून 2022 | अंक 7

सम्पादकीय

एक अच्छा प्रचारक

हम सब की यह इच्छा होती है कि समाज में तथा मित्रों के बीच हमारा आदर हो। कई लोग अपनी पहचान इस तरह से बनाकर रखते हैं ताकि लोग उन पर कभी उंगली न उठा सके। अय्यूब परमेश्वर का एक ऐसा ही जन था। बहुत सारी मुसीबतों के बावजूद भी उसने अपने विश्वास तथा सम्मान की रखवाली की और उसने अपने सताने वालों से कहा था, "ईश्वर न करे कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊं जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक मैं अपनी खराई से न हटूंगा। मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूं, और उसको हाथ से जाने न दूंगा..." (अय्यूब 27:5, 6)। एक प्रचारक को अपने जीवन में खरापन रखना चाहिए तथा अपने विश्वास को बेचना नहीं चाहिए। जो उन्होंने सीखा है तथा यह निर्णय लिया है कि वह सत्य का प्रचार करेंगे उसे अपने जीवन में स्थिर रखना चाहिए। बाइबल में बुद्धिमान प्रचारक कहता है, "सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं, और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।" (नितिवचन 23:23)। एक प्रचारक को थोड़े से पैसों के लालच में अपने आपको झूठी शिक्षा को प्रचार करने के लिये नहीं बेचना चाहिए। बड़े दु:ख की बात है कि वे जो वचन की सच्चाई को जानते हैं, चन्द रुपयों के लालच में अपने को बेच देते हैं तथा ऐसी शिक्षओं का प्रचार करने लगते हैं जिनका वे कभी विरोध करते थे। पौलूस ने युवा प्रचारक तिमुथियुस को लिखकर कहा था, "मैं सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्य जातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।" (1 तिमुथियुस 2:7)। सच्चे प्रचारक केवल सच्चाई का प्रचार ही नहीं करेंगे बल्कि दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण भी रखेंगे। जवान प्रचारक को लिखते हुए प्रेरित पौलुस कहता है, "कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए, पर वचन, और चाल-चलन और प्रेम और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।" (1 तिमु. 4:12) एक प्रचारक को दूसरों के सामने अच्छा उदाहरण रखना चाहिए।

कई प्रचारक पैसे के लोभ में फंसकर अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं। कईयों को पैसे से इतना प्रेम हो जाता है कि वे प्रचार करने में भी ढीले पड़ जाते हैं। तथा ऐसे प्रचारक भी हैं जो सामाज सेवा में इतने लीन हो जाते हैं कि उनके जीवन का अधिक समय सामाजिक सेवा में लगने लगता है। पैसे से प्रेम के विषय में बाइबल कहती है, "क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटकर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।" (1 तीमु. 6:10)। रुपये का लोभ एक बहुत बड़ी समस्या है। कई प्रचारक अपने डीनोमीनेशन को छोड़कर जैसा आप चाहेंगे वैसा प्रचार करने के लिये इसलिये तैयार हो जाते हैं क्योंकि उन्हें पैसा चाहिए। वे अपना विवेक या ज़मीर तक बेचने के लिये तैयार हो जाते हैं। अपनी आत्मा को पैसों के लिये बेच देना कितनी अजीब सी लगती है यह बात।

अक्सर यह भी देखा जाता है कि कई प्रचारक हमेशा यही बातें करते हैं कि तुझे कितने पैसे मिलते हैं? मुझे तो इतने मिलते हैं और मैं चाहता हूं कि किसी तरह से और मिल जायें। अर्थात उनका विषय हमेशा पैसा ही रहता है। और कई प्रचारक ऐसी बातें करते-करते विनाश के समुंद्र में डूब जाते हैं। पौलुस ऐसे लोगों के विषय में इस प्रकार से कहता है, "पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती है और विनाश के समुद्र में डूबा देती है। (1 तीमु 6:9)।

हम यह कह सकते हैं कि जो इस प्रकार के प्रचारक होते हैं वे मन से परमेश्वर की सेवा नहीं करते। उनमें प्रचार करने की वो लगन नहीं है जो परमेश्वर चाहता है। उनके अन्दर वो निश्चय नहीं है कि मुझे सत्य का प्रचार करना है। यह ऐसे प्रचारक होते हैं जो अवसरवादी होते हैं। वे पैसे के लिये प्रचार करते हैं तथा वे ऐसे चरवाहों की तरह है जो भेड़िया या शेर आने पर अपनी भेड़ों को छोड़कर भाग जाते हैं। यीशु ने कहा था, "मजदूर जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। वह इसलिये भाग जाता है क्योंकि वह मजदूर है, और उसको भेड़ों की चिंता नहीं है।" (यूहन्ना 10:12-13) चरवाहा पैसों के लिये काम करता है और इसलिये मुसीबत आने पर भाग जाता है।

एक प्रचारक होते हुए हमारे सामने कई प्रकार की परीक्षाएं आती हैं। और यदि ऐसी परीक्षाएं आती हैं तो हमारा व्यावहार इनके प्रति क्या होना चाहिए? हमें कहना चाहिए कि, "इसलिये हम निडर होकर कहते हैं, प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरुंगा, मनुष्य मेरा क्या कर सकता हैं?" (इब्रानियों 13:6)।

एक बहुत अच्छा उदाहरण जो हम देखना चाहेंगे वो एक चर्च ऑफ़ क्राईस्ट के प्रचारक के विषय में है। जब इस प्रकार ने बैपटिस्ट चर्च को छोड़कर अपने आप को पूर्ण रूप से मसीह की सेवा के लिये दे दिया तब उसके बैपटिस्ट मित्रों ने कहा कि हम तुम्हारी सैलरी डबल करवा देंगे तथा तुम्हें और भी सुविधाएं मिलेंगी परन्तु तब इस प्रचारक ने कहा कि, "मेरा विवेक (ज़मीर) कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे मैं बाज़ार मैं लेकर आऊं" और उसने कहा कि, "यदि मैं इसे बेचना भी चाहूं तो तुम्हारे

शहर में चाहे जितना भी धन दौलत हो तौभी इसे खरीद नहीं सकते" यीशु ने कहा था, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा?" (मरकुस 8:36-37)।

आज प्रत्येक प्रचारक को, यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या दौलत और शोहरत के लिये कहीं मैं अपनी आत्मा को तो नहीं बेच रहा? आप किसको प्रसन्न करना चाहते है? मनुष्य को या परमेश्वर को? सच्चाई का प्रचार करेंगे या 5000 रुपयों के लिये झूठी शिक्षा का प्रचार करेंगे? पौलुस ने अपने समय में लोगों से कहा था, "मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया है उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की और झुकने लगे, हों।" (गल. 1:6) और फिर वह आगे कहता है, "जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुमने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मानता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता।" (गलतियों 1:9-10)।

परमेश्वर का वही अर्थ होता है, जो वह कहता है

सनी डेविड

मित्रो, एक समय ऐसा भी था जब परमेश्वर अपनी इच्छा को स्वयं लोगों पर प्रकट किया करता था। उस समय परमेश्वर की इच्छा लोगों के पास लिखी हुई किताब में नहीं थी। उन लोगों के पास बाइबल नहीं थी, जैसे कि आज हमारे पास है। आज यदि हम किसी भी बात के बारे में परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं, तो हम बाइबल में से पढ़कर उसकी इच्छा को जान सकते हैं। जैसे, अगर हम जानना चाहें, कि परमेश्वर कौन है? इस जगत की उत्पत्ति कैसे हुई? मनुष्य इस पृथ्वी पर कहां से आया और वह कहां जा रहा है? मनुष्य को अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये क्या करना चाहिए? स्वर्ग क्या है? नरक क्या है? और इसी तरह के अन्य प्रश्नों के उत्तर हम आज बाइबल में से पढ़कर देख सकते है, वह बिल्कुल सच है, क्योंकि बाइबल को जिन लोगों ने लिखा था, उन्होंने परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा प्रत्येक बात को बाइबल में लिखा था। लेकिन इससे पहले, जब लोगों के पास बाइबल नहीं थी, जब परमेश्वर की इच्छा लिखित रूप में मनुष्य के पास नहीं थी। उस समय परमेश्वर कुछ विशेष लोगों पर अपनी इच्छा को प्रकट करके लोगों से संबंध रखता था। उन लोगों को, जिन पर या जिनके द्वारा परमेश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त करता था, भविष्यवक्ता कहा जाता था।

और आज हम अपने पाठ में एक ऐसे ही भविष्यवक्ता के बारे में देखने जा रहे हैं। उस भविष्यवक्ता का नाम बिलाम था। और यह बात उस समय की है, जब

परमेश्वर अपने एक चुने हुए दल अर्थात इसराएल को ऐसे देश में ले जा रहा था जिसे उसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। लेकिन मार्ग में ऐसे बहुत से देश और राज्य पड़ते थे, जो उन्हें आगे बढ़ने से रोकते थे, परन्तु क्योंकि परमेश्वर उनके साथ था, इसलिये वे सब देशों और राज्यों को पराजित करके आगे ही बढ़ते जा रहे थे। और उसी समय की बात है, जिसे हम बाइबल में गिनती की पुस्तक के 22वें अध्याय में इस प्रकार पढ़ते हैं, कि-

'तब इसराएलियों ने कूच करके यरीहों के पास यरदन नदी के पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किए। और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा, कि इसराएलीयों ने अमोरियों के साथ क्या-क्या किया है। इसलिये मोआब यह जानकर, कि इसराएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यंत डर गया; जहां तक कि मोआब इसराएलियों के कारण अत्यंत व्याकुल हुआ। तब मोआबियों ने विद्यानी पुरनियों से कहा, कि अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसा चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है। उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था। सो उस ने पतोर नगर को, जो महानद के तट पर बोर के पुत्र बिलाम के जाति भाइयों की भूमि थी, वहां बिलाम के पास दूत भेजे, कि वे यह कहकर उसे बुला लाएं, कि एक दल मिसर से निकल आया है, और भूमि उनसे ढह गई है, और अब वे मेरे सामने ही आकर बस गए हैं। इसलिये आ और उन लोगों को मेरी ओर से शाप दे, क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं; तब संभव है कि हम उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं जानता हूं कि जिस को तू आशीर्वाद देता है, वह धन्य होता है, और जिस को तू शाप देता है, वह शापित होता है। तब मोआबी और मिद्यानी पुरनिए भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुंचकर उसे बालाक राजा की बातें कह सुनाई। बिलाम ने उनसे कहा, कि आज रात को यहां टिको, और जो बात यहोवा मुझ से कहेगा; उसी के अनुसार मैं तुम को जवाब दूंगा। तब वे लोग बिलाम के यहां ठहर गए। तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा, कि तेरे यहां ये आदमी कौन है? बिलाम ने परमेश्वर से कहा, कि सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है; कि जो दल मिसर ने निकल आया है, उससे भूमि ढंक गई है; इसलिये आकर उन्हें मेरे लिये शाप दे, तब मैं उनसे लड़कर बरबस निकाल सकूंगा। परमेश्वर ने बिलाम से कहा, तू इनके संग मत जा, उन लोगों को शाप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं। सो, भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा, तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता। तब मोआबी हाकिम वापस चले गए, और उन्होंने बालाक के पास जाकर कहा, कि बिलाम ने हमारे साथ आने से मना कर दिया है। इस पर बालाक ने फिर से और हाकिम भेजे, जो पहलों से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। उन्होंने बिलाम के पास आकर कहा, कि सिप्पोर का पुत्र बालाक यों कहता है, कि मेरे पास आने से किसी कारण मना मत कर। क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा; इसलिये आ और उन लोगों को मेरे लिये शाप दे। इस पर बिलाम ने बालाक के कर्मचारियों को जवाब देकर कहा, कि चाहे बालाक अपने घर को सोने-चांदी से भरकर मुझे दे

दे, तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ाकर मानूं। इसलिये अब तुम लोग भी आज रात को यहीं रूको, ताकि वे जान लें, कि यहोवा मुझ से और क्या कहता है। और परमेश्वर ने रात को बिलाम के पास आकर कहा, यदि वे आदमी तुझे बुलाने आए है, तो तू उठकर उन के संग जा; परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूं उसी के अनुसार करना। तब बिलाम भोर को उठा, और अपनी गदही पर काठी बांधकर, मोआबी हाकिमों के संग चल पड़ा।

किन्तु, तब उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गदही पर सवार होकर जा रहा था, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे। और उस गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई; तब बिलाम ने गदही को मारा, कि वह मार्ग पर फिर आ जाए। तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच गली में, जिस के दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ। तब यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई, कि बिलाम का पांव दीवार से दब गया; तब उसने उस को फिर मारा। तब परमेश्वर का दूत आगे बढ़कर एक संकेत स्थान पर खड़ा हुआ, जहां न तो दाहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाई ओर। वहां यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये दिये वहीं बैठीं गई। फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उसने गदही को लाठी से मारा। तब परमेश्वर ने गदही का मुंह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, कि मैंने तेरा क्या किया कि तूने मुझे तीन बार मारा? बिलाम ने गदही से कहा, यह कि तूने मुझ से नटखटी की है। यदि मेरे हाथ मे तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता। गदही ने बिलाम से कहा, क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी? वह बोला, नहीं। तब परमेश्वर ने बिलाम की आंखें खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ मैं नंगी तलवार लिये हुए मार्ग मैं खड़ा दिखाई दिया; तब वह झुक गया, और मुंह के बल गिरकर दन्डवत किया। तब यहोवा को दूत ने उससे कहा, तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूं, इसलिये कि तू मेरे सामने उलटी चाल चलता है; और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई। और यदि वह मेरे सामने से नहीं हटती, तो निःसंदेह, मैं अब तक तुझे तो मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता। तब बिलान ने यहोवा के दूत से कहा, मैंने पाप किया है, मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मेरे सामने खड़ा है। इसलिये अब यदि तुझको बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूं। यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, इन पुरुषों के साथ चला जा; परन्तु केवल वह बात कहना जो मैं तुझ से कहूंगा। तब बिलाम बालाक के हाकिमों के साथ चला गया।"

बाइबल में लिखे इस वृत्तान्त के द्वारा जो शिक्षा हमें मिलती है वह बिल्कुल स्पष्ट हैं, अर्थात वह, कि परमेश्वर ने जो एक बार कह दिया, उसमें कोई भी बदलाव नहीं किया जा सकता। बिलाम, जिसके बारे में अभी हमने देखा, जानता था कि परमेश्वर ने उसे जाने को मना किया है। लेकिन तो भी वह इस बारे में दोबारा परमेश्वर के पास जानने के लिये गया। यानि बिलाम अपनी इच्छा को परमेश्वर पर

थोपना चाहता था; क्योंकि वह स्वयं जाना चाहता था। सो उसे सबक सिखाने के लिये परमेश्वर ने उसे जाने की अनुमति तो दे दी। पर फिर परमेश्वर ने मार्ग में उसे एक ऐसा पाठ सिखाया जिस से बिलाम की आंखें खुल गई। और उस ने सीख लिया कि परमेश्वर की आज्ञा को वैसे सही न मानकर जैसे कि परमेश्वर चाहता है, उसने कैसा भारी पाप किया है।

आज परमेश्वर हम से अपने वचन की पुस्तक बाइबल के द्वारा बोलता है। और हम परमेश्वर की पुस्तक में पढ़ते हैं, परमेश्वर चाहता है, कि हम वैसा ही करें। जैसे कि, उदाहरण के लिये प्रभु यीशु ने मरकुस 16:16 में कहा था, कि उद्धार पाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को उसमें विश्वास करके बपतिस्मा लेना चाहिए। सो मुक्ति पाने का और कोई उपाय नहीं है। परमेश्वर ने कहा है, और हमारा कर्तव्य यह है कि हम उसकी बात मानें। और यदि हम परमेश्वर की बात मानेंगे तो हम जानते हैं कि परमेश्वर न हमें केवल इसी जीवन में, परन्तु आने वाले जीवन में भी आशीषित करेगा।

उपासना का दिन

जे. सी. चोट

नए नियम में न केवल उपासना करने के महत्व को ही दर्शाया गया है, परन्तु इस बात को भी प्रकट किया गया है कि प्रभु की इच्छानुसार उसके लोगों को कौन से दिन उसकी उपासना करने के लिये एकत्रित होना चाहिए। सो वह कौन सा दिन है?

कुछ लोग यह सिखाते हैं कि सब्त का दिन आज भी मनुष्य के लिये उपासना का दिन है। क्या यह सच हो सकता है? कदापि नहीं, यदि व्यवस्था को समाप्त करके हटाया जा चुका है। और यह सच है, क्योंकि 2 कुरिन्थियों 3; गलतियों 3:23-25; कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 9:16, 17 और इब्रानियों 10:9 के द्वारा हम देखते हैं कि अब हम व्यवस्था के आधीन नहीं है। कुछ लोगों का तर्क है कि पौलुस सब्त के दिन यहूदियों के साथ मिलता था। यह सब हो सकता है, परन्तु कहीं पर भी ऐसा नहीं लिखा हुआ है कि वह उनके साथ उपासना करने का इक्ट्ठा होता था। इसके विपरीत, वह उन के पास इस अवसर का लाभ उठाने के लिये जाता था कि उन्हें परमेश्वर की इच्छा सिखाए।

सो यदि उपासना का दिन सब्त का दिन नहीं है, तो फिर कौन सा दिन है? जब हम नए नियम को पढ़ते हैं तो ऐसे अनेक पदों को हम देखते हैं जो हमारे इस प्रश्न का उत्तर देते हैं। सबसे पहिले, हम नए नियम के मसीही लोगों का एक उदाहरण देखेंगे जो उपासना करने के लिये एक स्थान पर एकत्रित हुए थे और हम देखेंगे कि वे कौन से दिन इक्ट्ठे हुए थे। हम देखते हैं, कि जब पौलुस त्रोआस से होकर निकल रहा था, तो लिखा है कि वह वहां कुछ दिन के लिये इसलिये रूका ताकि वहां के मसीही लोगों के साथ मिलकर उपासना करे। अब हम देखें कि वहां क्या लिखा है, "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो

दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की; और आधी रात तक बातें करता रहा।" (प्रेरितों 20:7)। इस बात पर भी अवश्य ध्यान दें कि प्रेरितों 20:6 में लिखा है कि वह त्रोआस में सात दिन तक रहा। जिसका अर्थ यह हुआ कि वहां सब्त के दिन अर्थात शनिवार के दिन भी था, परन्तु यहां हम यह नहीं पढ़ते कि वह वहां उस दिन मसीही लोगों के साथ उपासना करने को मिला, परन्तु इसके विपरीत सप्ताह के पहिले दिन, अर्थात सब्त के दिन के अगले दिन जो कि सप्ताह का पहिला दिन था। अब इस में क्या विशेष बात हो सकती है? विशेष बात इस में यह दिखाई देती है कि वहां वह सब्त के दिन उपासना करने के लिये नहीं रूका परन्तु इसके विपरीत उस दिन में उपासना करने के लिये वहां रूका जिसे प्रभु ने उपासना के लिये नियुक्त किया था और वह सप्ताह का पहिला दिन था।

किन्तु सप्ताह का पहिला दिन कौन-सा है? व्यवस्था के अनुसार सब्त का दिन सप्ताह का सातवां दिन था। सो इसका अर्थ यह हुआ कि यदि सब्त का दिन सप्ताह का सातवां दिन था, और प्रत्येक सप्ताह में केवल सात दिन होते हैं, तो सब्त के दिन के तुरन्त बाद सप्ताह का पहिला दिन आएगा, और फिर दूसरा दिन, इत्यादि। आज हम उस दिन को रविवार या इतवार कहते हैं, और रविवार ही सप्ताह का पहिला दिन है।

किन्तु सप्ताह का पहिला दिन क्यों रखा गया? मूसा की व्यवस्था में उपासना का दिन, सब्त का दिन, यानि सप्ताह का अंतिम दिन था। किन्तु मसीह के नए नियम में उपासना का दिन रविवार अर्थात सप्ताह का पहिला दिन है। इसका अर्थ यह है कि प्रभु का स्थान अंतिम नहीं परन्तु पहिला है। (मत्ती 6:33)।

फिर, दूसरे स्थान पर इस संबंध में, आगे हम यह देखते हैं कि प्रेरित पौलुस कुरिन्थुस में भाईयों को लिखकर बताता है कि उन्हें कौन से दिन चंदा देना चाहिए। यहां इस प्रकार लिखा है, "अब उस चंदे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैं ने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।" (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। परन्तु इसी दिन को क्यों चुना गया कि वे उस दिन अपनी आमदनी के अनुसार चंदा दें? क्योंकि यह उपासना का दिन था और क्योंकि वे सब उपासना करने के लिये एकत्रित होंगे सो इस कारण वह समय चंदा इक्ट्ठा करने के लिए उचित था। किन्तु, अब यदि उपासना करने का दिन सब्त का दिन होता तो पौलुस उनसे यह कदापि न कहता कि वे फिर से अगले दिन चंदा देने के लिये इक्ट्ठे हो। दूसरी ओर, वे लोग जो आज यह सिखाते हैं कि उपासना का दिन शनिवार है, क्या वे फिर से रविवार के दिन चंदा देने के विषय में परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए एकत्रित होते हैं? यदि नहीं, तो ऐसा क्यों है?

फिर हम यह भी देखते हैं कि, एक जगह यूहन्ना सप्ताह के पहिले दिन को सम्बोधित करके उसे प्रभु का दिन कहता है। उसने कहा, "कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया।" (प्रकाशितवाक्य 1:10)। यह सही है कि इस तरह से प्रत्येक दिन प्रभु का दिन है, परन्तु यहां यूहन्ना ने इस दिन का वर्णन एक विशेष ढंग से किया है। यहां प्रभु के दिन का अभिप्राय उपासना के दिन अर्थात सप्ताह के पहिले दिन से है।

अन्यथा, वह उसे प्रभु का दिन कहकर सम्बोधित क्यों करता है?

परन्तु सप्ताह का पहिला दिन इतना महत्वपूर्ण क्यों है? इसके अतिरिक्त, जैसा कि इससे पूर्व कहा जा चुका है, कि वह इस बात को प्रकट करता है कि प्रभु के पुराने नियम का स्थान अब उसके नए नियम ने ले लिया है और प्रभु का स्थान अब पहिला है, इस सम्बंध में कुछ अन्य कारण जो इस दिन के महत्व को दर्शाते हैं निम्नलिखित हैं-

1. सप्ताह के पहिले दिन मसीह का पुनरुत्थान हुआ था

जिस दिन प्रभु जी उठा था उसका वर्णन इन शब्दों में मिलता है "सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई।" (मत्ती 28:1)। फिर उसी दिन के बारे में हम आगे इस प्रकार पढ़ते हैं, उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, संध्या के समय जब वहां के द्वार, जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बंद थे, तब यीशु आया और बीच में खड़े होकर उनसे कहा, तुम्हें शांति मिले।" (यूहन्ना 20:19)।

2. यीशु फिर सप्ताह के पहिले दिन चेलों के सामने प्रकट हुआ

न केवल सप्ताह के पहिले दिन यीशु जी उठकर कब्र में से बाहर आया और उसी दिन अपने चेलों को दिखाई दिया, परन्तु एक बार फिर से हम इस बात को देखते हैं कि वह दोबारा फिर उन्हें सप्ताह के पहिले दिन दिखाई दिया। लिखा है, "आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था, और द्वार बंद थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़े होकर कहा, तुम्हें शांति मिले।" (यूहन्ना 20:26)। अब यदि पहिली बार सप्ताह के पहिले दिन यीशु अपने चेलों को दिखाई दिया, और आठ दिन के बाद वह उनके पास फिर से आया, तो दूसरी बार वह उनके पास कौन से दिन आया? नि:संदेह सप्ताह के पहिले दिन ही। किन्तु पवित्र शास्त्र में इस बात पर हमारा ध्यान बार-बार क्यों दिलाया गया है? क्योंकि यह दिन यीशु मसीह के नए नियम में एक विशेष दिन बनने जा रहा था। यह उपासना का दिन होने जा रहा था।

3. कलीसिया का आरंभ सप्ताह के पहिले दिन हुआ था (प्रेरितों 2)

पिन्तेकुस्त का दिन फसह के दिन के तथा प्रभु यीशु के कब्र में से जी उठने के पचास दिन के बाद आया था। सो जबकि प्रभु का पुनरुत्थान सप्ताह के पहिले दिन हुआ था और फिर पिन्तेकुस्त का दिन पचास दिन बाद आया, तो पिन्तेकुस्त सप्ताह के कौन से दिन आया? सप्ताह के पहिले दिन। परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन का क्या महत्व है? इस संबंध में इस दिन की विशेषता इस बात में है कि यह सप्ताह के पहिले दिन आया था और इसी दिन को प्रभु ने अपनी कलीसिया की स्थापना की थी। किन्तु यही नहीं, पर और भी कुछ महत्वपूर्ण बातें पहिली बार इसी दिन घटी थी, और वे सभी बातें हमारा ध्यान और भी अधिक इस दिन के महत्व की ओर दिलाती है। उदाहरणार्थ, इस दिन पवित्रात्मा आया था, सबसे पहली बार वास्तव में सुसमाचार का प्रचार इसी दिन किया गया था, इसी दिन पहिली बार जिन लोगों ने सुसमाचार को सुना और उसे माना था उन का उद्धार हुआ था, और वे कलीसिया में मिलाए गए थे (प्रेरितों 2:47)। इसलिये, जिस दिन ये सभी बातें घटीं उस दिन को साधारण

दिन नहीं कहा जा सकता।

मेरा विश्वास है, कि अब हमें इस बात का वास्तव में निश्चय हो गया है कि प्रभु ने सप्ताह के पहिले दिन को ही चुना है ताकि इस दिन में उसके लोग एकत्रित होकर उसकी उपासना करें। प्रथम मसीही लोगों के इस उदाहरण से कि वे सप्ताह के पहिले दिन इक्ट्ठे होते थे, और इस बात को देखकर कि उन्हें सप्ताह के पहिले दिन चंदा देने की आज्ञा दी गई थी, अब इस सम्बंध में हमारे मन में ऐसा कोई संदेह नहीं रह जाना चाहिए जो कदाचित इस से पूर्व था। याद रखें इस बात को, कि उपासना में तथा अन्य सभी बातों में प्रभु का स्थान पहिला होना चाहिए। इसीलिये प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन मसीही लोगों को एकत्रित होकर उसकी उपासना करनी चाहिए, और उसे स्मरण करना चाहिए जो हमारे लिये मर गया और मृत्यु के पश्चात सप्ताह के पहिले दिन फिर से हमारे लिये जी उठा।

घर में भलाई (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

यदि हमें घर या परिवार का विवरण देना हो तो हम इस विशेषण का इस्तेमाल कर सकते हैं? टूटा?, अशांत?, पिछड़ा हुआ? दबा हुआ, दुखी? परमेश्वर इसका वर्णन कैसे करेगा? शायद वह अच्छा विशेषण का इस्तेमाल करेगा। जब आदमी अकेला था तो परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं (उत्पत्ति 2:18क)। फिर उसने आदम के लिए उससे मेल खाती एक सहायक बनाई। उसने निष्कर्ष निकाला होगा कि आदम के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है, इस कारण घर में उसके साथ रहने वाला साथी होना अच्छा है। निश्चय ही परिवार के प्रमुख कार्यों में से एक साथ देना है। घर अच्छा है।

घर के लिए आत्मा के इस छठे गुण को लागू करने में हमें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए और यह गुण भलाई है। गलातियों 5:22, 23 कहता है, पर आत्मा का फल, प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

इस पाठ में हम यह चर्चा करना चाहते हैं कि एक सफल घर को जहां आत्मा का वास है बनाने में भलाई कैसे सहायक हो सकती है।

यह भलाई क्या है?

आरंभ करते हुए हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भलाई आत्मा के फल का एक भाग है। हमारे जीवनों में भलाई है, क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है। कोई भी सचमुच में अच्छा या जहां तक हो सके अच्छा तक बनने की उम्मीद नहीं कर सकता जब तक वह मसीही नहीं है और पवित्र आत्मा उसके अन्दर वास नहीं कर रहा। परन्तु जब हम मसीही हैं तो हमें उस भलाई की उम्मीद करनी चाहिए कि हम जहां भी हो चाहे घर में, उसका पता चले।

इस संदर्भ में भलाई के लिए पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया एक प्रचारक ने कहा है कि भलाई एक नैतिक गुण है। उसने और कहा कि विशेषण से वर्णित की गई बात

कुछ ऐसी है जो अपने स्वभाव या रचना में अच्छा होने के कारण अपने प्रभाव में लाभकारी है। इस शब्द में पीछे लगने वाले गुण भी हैं जिनके द्वारा आवश्यक नहीं कि दूसरों से भलाई कोमलता से हो। जे.बी. लाइटफुट ने संकेत दिया कि यह शब्द दूसरों की ओर से दयालुता के कार्यों का सुझाव देता है।

दोनों आयतें जहां इस शब्द का इस्तेमाल किया गया है इसे बेहतर ढंग से समझने में हमारी सहायता कर सकती है। रोमियों 15:14 कहता है, हे मेरे भाइयो; मैं आप भी तुम्हारे विश्वास में निश्चय जानता हूं कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक-दूसरे को चिता सकते हो। इफिसियों 5:9 में पौलुस ने लिखा (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता और सत्य है) तो हम देखते हैं कि भलाई और धार्मिकता और सत्य है) तो हम देखते हैं कि भलाई आदर्श मसीही जीवन का भाग है और ज्ञान होने और दूसरों को निर्देश देने या समझाने के योग्य होने के साथ जुड़ी है। इसके अलावा यह धार्मिकता और सच्चाई के समानान्तर है। यह ज्योति में होने अर्थात परमेश्वर और उसके साथ जुड़े होने का परिणाम है।

ऐसी भलाई मसीही जीवन और मसीही घर की पहचान होनी चाहिए। यदि ऐसा हो तो उसके बाद क्या होगा?

भलाई किस प्रकार से घर के भीतर लोगों को प्रभावित करती है

घर जिसमें आत्मा वास करता है भलाई करने वाले अच्छे लोगों से बनता हैं अच्छे लोगों से बात करना अजीब लग सकता है, जब यीशु ने कहा, भला तो एक ही है (मत्ती 19:17ख)। पर इस शब्द का इस्तेमाल लोगों के लिए भी हुआ है। उदाहरण के लिए प्रेरितों 11:24क में बरनबास को भला मनुष्य कहा गया है। यह वह खूबी है जो केवल पूर्ण रूप में पाई जाती है, पर इसे हम कुछ हद तक बांट सकते हैं। इस अर्थ में हमें परमेश्वर के जैसे बनना आवश्यक है (देखें इफिसियों 5:1)।

यह तथ्य कि धनवान, जवान हाकिम ने यीशु को भला कहा हमें भला होने के अर्थ के बारे में बताता है। भला होना यीशु के जैसे बनना है? कम से कम तीन प्रकार से (1) भला होना शुद्ध होना है। यीशु बिना पाप के था (इब्रानियों 4:15)। (2) भला होना भलाई करना है। यीशु भलाई करता फिरा (प्रेरितों 10:38)। गलातियों 6:10 कहता है, जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाईयों के साथ। (3) भला होना सच बोलना है। यीशु की पहचान परमेश्वर की ओर से गुरू के रूप में थी (यूहन्ना 3:2)। प्रेरितों 11:24 के अनुसार बरनबास एक भला मनुष्य था। उसकी भलाई से प्रभु की कलीसिया में कई लोग मिल गए। जिस अर्थ में यीशु भला था उस अर्थ में व्यक्ति वास्तव में भला नहीं हो सकता। यदि दूसरों को मन फिराव के लिए मोड़ने की कोशिश किए बिना उन्हें खाने की अनुमति देता है।

इस अर्थ में घर अपनी भलाई के लिए कैसे जाना जा सकता है? घर में जहां आत्मा वास करता है भलाई कैसे निकल सकती है?

पहले तो घर के अगुओं का नया जन्म होना आवश्यक है। भलाई मसीही लोगों की पहचान है।

दूसरा, सिखाया जाना आवश्यक है। घर में बच्चों और व्यस्कों को दूसरों के लिए सहायक और दयालु होना, अपने से पहले दूसरों का सोचना और शुद्ध और सरल होना आवश्यक है। इसके अलावा यह सिखाया जाना अनुशासन से हो। फिर सिखाया जाना

बातों से अधिक होना चाहिए। माता-पिता को नमूना देकर सिखाना चाहिए।

तीसरा, घर में ऐसा माहौल होना आवश्यक है जिसमें भलाई को एक बड़ा गुण माना जाए। हम अपने बच्चों को बताते हैं, हो सकता है कि तुम स्कूल में सबसे सुन्दर या सबसे अधिक नम्बर लेने वाले या सबसे बढ़िया धावक न बन सको; पर तुम सबसे अच्छे लोग बन सकते हो। हमें भलाई करने की बातें अपने बच्चों से करनी आवश्यक है। भला करने पर परिवार के रूप में दिन की गतिविधियों में की जाने वाली चर्चा पर जोर दिया जाना चाहिए। बच्चों द्वारा की जाने वाली भलाई का प्रोत्साहित किया जाना और उन्हें प्रतिफल दिया जाना चाहिए। क्या हमें स्कूल में अच्छा करने या कोई विशेष गतिविधि में श्रेष्ठ काम करने पर अपने बच्चों को प्रतिफल नहीं देते? शायद हमें बुजुर्गों की सहायता करने शायद दूसरों के लिए भले कार्य करने पर भी ऐसे ही प्रतिफल देना चाहिए।

भलाई घर के बाहर लोगों को कैसे प्रभावित करती है

यदि घर में सचमुच भलाई हैं तो वह भलाई घर से बाहर की ओर बढ़ेगी। घर कलीसिया में और समाज में और वास्तव में पूरे संसार में दूसरों के लिए सहायता और आशीष का श्रोत बन जाता है।

भलाई से भरा घर कैसे होता है? बाइबल इसके कई उदाहरण देती है।

बाइबल के उदाहरण

प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला। प्रिसकिलला और अक्विल्ला के घर की तरह भलाई से भरा घर था। वे पौलुस के सहकर्मी थे; वे व्यावसायिक मिशनरी थे। वे दूसरों को (विशेषकर अपुल्लोस (प्रेरितों 18:24-26) को सिखाते और उनके घर में कलीसिया इक्ट्ठा होती थी।

1 तीमुथियुस 5:10 वाली स्त्री। भलाई से भरा घर उस स्त्री के घर जैसा है जिसका वर्णन 1 तीमुथियुस 5:10 में किया है। वह भले काम में सुनाम थी। उसने बच्चों का पालन-पोषण किया था, पाहुनों की सेवा की थी। पवित्र लोगों के पैर धोए थे और हर एक भले काम में मन लगाया था।

प्राचीनों के घर। भलाई को दिखाने वाला घर प्राचीनों के घर जैसा है जिन्हें पहुनाई करने वाले होना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 3:2)।

फिलेमोन भलाई को बांटने वाला घर फिलेमोन के घर जैसा है। उसके घर में कलीसिया इक्ट्ठा होती थी (आयत 2)। उसने पवित्र लोगों के मन हरे-भरे किए थे (आयत 7) और ऐसा व्यक्ति था जिस पर प्रेरितों के लिए अतिथि गृह देने का भरोसा किया जा सकता था (आयत 22)।

गयुस। अपनी भलाई से भरा घर अब्राहम के घर जैसा है जिसने तीन परदेसियों की पहुनाई की थी (उत्पत्ति 18:1-8; तुलना करें इब्रानियों 13:2)।

समकालीन उदाहरण

इस गुण को और पहचान दिलाने के लिए आइए, वास्तविक जीवन के कुछ उदाहरणों पर विचार करते हैं:

घर का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए करना। हम एक परिवार में इक्ट्ठा होते थे। जो गलत शिक्षा से परिवर्तित हुए थे। घर का आदमी उस शिक्षा के लिए इतना जनून

रखता था कि उसने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के लिए अपने घर में विशेष रूप में एक अतिरिक्त कमरा बना लिया था। मसीही परिवार अपनी ओर से प्रचारक का कमरा बनाने का निर्णय ले सकता है। जो बाहर से आने वालों के लिए अलग से बना हो।

व्यावसायिक मिशनरियों के रूप में सेवा करना। हम एक परिवार को जानते थे जो ऑस्ट्रेलिया में आकर अपने खर्च से मिशनरी काम करते थे। उस परिवार के आदमी ने एक वैन खरीद ली ताकि उनके पास कलीसिया में और लोगों को लाने के लिए बड़ी गाड़ी हो जाए। उसने अपने परिवार की आवश्यकता से कहीं बड़ा बाग लगा दिया ताकि कलीसिया में हर किसी को कुछ खाना मिल सके। एक और परिवार जो आस्ट्रेलिया के निवासी थे, क्वीजलैंड, आस्ट्रेलिया में वहां कलीसिया स्थापित करने के लिए आ गया, क्योंकि वहां कोई कलीसिया नहीं थी। पिता अपना काम करता और कलीसिया का खर्च उठाता और परिवार के लोगों ने उस छोटी चर्च बिल्डिंग में अपना गैराज बना लिया।

परोपकार के काम करना। डैटरोयट, मिशिगन यानी उस इलाके में हम एक परिवार को जानते हैं, जिन्होंने (अपनी ओर से, न कि कलीसिया के काम के रूप में) टोकरियां बनाना और उन्हें साल के विशेष समयों पर गरीब और लाचार लोगों को देना अपनी आदत बना ली। उन्होंने उस काम में अपने बच्चों को भी लगा लिया। कई परिवार और तरह की परोपकारी गतिविधियों में अपने बच्चों को लगा लेते हैं। उदाहरण के लिए माता-पिता बीमारों या बुजुर्गों को देखने के लिए अपने बच्चों को साथ ले जा सकते हैं।

मेहमाननवाजी दिखाना। कई परिवार किसी पर्व पर इक्ट्ठा होने पर उन लोगों को अपने साथ खाने और परिवार के अनुभव के लिए अपने साथ बुला लेते हैं जिनके परिवार नहीं होते। जब मैं छोटा था, तो कलीसिया में कुछ स्त्रियां होती थी जो रविवार के दिन काफी सारा खाना तैयार करती थी ताकि कलीसिया में यदि कोई बाहर से आता है; तो वे उससे रविवार शाम खाने के लिए बुला सकें। उन सभाओं में कोई भी बिन बुलाए नहीं रहता था। मुझे एक परिवार की बात भी याद है जिसके बारे में मैंने पढ़ा था कि वे खाने की मेज पर कुछ अतिरिक्त जगह रहने देते थे ताकि यदि खाते समय कोई आ जाए तो वह उनके साथ शामिल हो सके। और कुछ लोग हैं जो ऐसा ही कुछ करते हैं, या वे आगन्तुकों को अपने साथ खाने के लिए रेस्तरां में ले जाते हैं।

बच्चों की देखभाल। कुछ परिवारों ने अनाथलयों में से बच्चे गोद लेकर या उनका खर्चा देकर अपने घरों में ले आए है। ऐसा करके उन्होंने अपने घरों का इस्तेमाल भलाई करने के लिए किया है।

कलीसिया की सभाओं की मेजबानी करना। संसार में कई भागों में कलीसिया लोगों के घरों में इक्ट्ठा होती है। मैं एक परिवार को जानता था जो कई साल तक शनिवार को घर से बाहर नहीं जाते थे। रविवार को घर से बाहर नहीं रहना चाहते थे, क्योंकि उनके घर में कलीसिया इक्ट्ठा होती थी।

सिखाना, प्रचार करना और मिशन कार्य करना। कई परिवारों ने मिशन कार्य करने को अपनी प्राथमिकता बना लिया है। परिवार के लोगों ने मिशनरियों को लिखना या उन्हें पैसे भेजना या वर्ल्ड बाइबल स्कूल जैसे कार्यों में भाग लेकर उनकी सहायता करना अपना शोक बना लिया है। अन्य लोगों ने, परिवारों के रूप में अपने घरों में प्रार्थना सभा रखकर, बच्चों को मिलने या सिखाने के लिए अपने साथ ले जाकर,

आसपास के स्थानों या बाहर जाकर व्यक्तिगत काम को प्रोत्साहित किया है। अन्य परिवारों ने बाइबल क्लासों में सिखाने में अपने बच्चों को लगाया है।

परमेश्वर के लिए अपने घरों का इस्तेमाल करने में रूकावटें

इन उदाहरणों में दिए लोगों द्वारा दिए कामों जैसे काम करके परमेश्वर के लिए अपने घरों का इस्तेमाल करने से हमें कौन सी चीज रोकती है? संभवतया ऐसी भागीदारी में तीन रूकावटें हैं।

परिवार की समझ न होना। हो सकता है कि हमने परिवार की समझ खो दी हो। जब हम कभी इक्ट्ठा नहीं खाते, या इक्ट्ठे और काम नहीं करते तो हम परिवार होने की कोई भावना कैसे पा सकते हैं? कलीसिया परिवार होना चाहिए; बाहर जाना और कलीसिया और समाज और अपने आस-पास में दूसरे लोगों के साथ भलाई करना हमारे अस्तित्व का एक बड़ा उद्देश्य है।

आत्म-केन्द्रित होना। हमारा आत्म केन्द्रित होना हमें घर को केन्द्र बनाने से रोकेगा जहां से भलाई का प्रकाश चमकना चाहिए। यदि हम केवल अपनी ही सेहत की कमी, अपने बच्चों, अपनी परेशानियों अपने बिलों और अपने सांसारिक लक्ष्यों की ही चिंता करते हैं तो हम दूसरों की सहायता करने में समय या प्रयास नहीं लगाएंगे।

कमजोर प्राथिमकताएं परिवार के रूप में हम दूसरों का भला करने से रोकेंगे। आज मसीही परिवारों के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक गलत प्राथमिकताओं का होना है। हमें धन, स्वास्थ्य, शिक्षा, खेलों, सम्पत्ति, सांसारिक प्राप्तियों, सुन्दरता, प्रसिद्धि, आमोद-प्रमोद, मनोरंजन जैसी अन्य दिलचस्पियों को अच्छा बनने और भलाई करने से बढ़कर महत्वपूर्ण नहीं बनने देना चाहिए। यदि हम भलाई के फल की आशा रखते और सचमुच के मसीही घर चाहते हैं जिन में आत्मा का वास हो, अर्थात घरों की पहचान भलाई करने से हो तो हमें अपने परिवारों में मसीहियत को सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाना आवश्यक है।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

आपने सुना होगा कि अकसर यह कहा जाता है कि बपतिस्मा कैसे भी ले लिया जाए इससे कुछ अंतर नहीं पड़ता। जल की बूंदे छिड़ककर या जल उन्डेलकर या फिर जल में डूबकर कैसे भी बपतिस्मा लिया जा सकता है। क्या यह सच है? इस संबंध में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा शब्द हिन्दी भाषा का शब्द नहीं है। यूनानी भाषा के बैपटिज़ो शब्द को हिन्दी में बपतिस्मा कहकर सम्बोधित किया गया है। यूनानी भाषा में बैपटिज़ो शब्द का अर्थ है डूबोना भीतर गाड़ना, दफन करना। यूनानी भाषा की बाइबल में, जबकि डुबोने के लिये बैपटिजो शब्द इस्तेमाल में लाया गया है, छिड़कने के लिये रहानटिजो और उडेलने के लिये चिओ शब्द का उपयोग हुआ है। मसीहीयत की स्थापना से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व यूनानी में लिखी गई पुरानी नियम की पुस्तक में, जिसे 'सप्टुआजिन्ट' कहा जाता है, लैवयव्यवस्था 14:15-16 के विवरण में इन तीनों शब्दों का उल्लेख मिलता है, और बड़े ही स्पष्ट रूप में यहां से देखा जा सकता

है कि इन तीनों शब्दों को किस प्रकार अलग-अलग ढंग से इस्तेमाल किया गया है। वहां पहले लिखा है, कि याजक तेल डाले या उंडेले (चिओ), फिर उंगली को डुबोए (बैपटिज़), और फिर छिड़के (रहानटिज़ो)। इस विवरण को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि बैपटिजो शब्द को डुबोने के लिये इस्तेमाल किया जाता था। इस विषय में बाइबल की शिक्षा बिलकुल साफ है कि बपतिस्मा केवल डूबकर या गाड़े जाकर ही लिया जा सकता है।

रोमियों 6:4-5 को पढ़कर हम सीखते हैं, "सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। और अब रोमियों 6:17-18 पर भी ध्यान दें, जहां यूं लिखा है, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।

कहने का तात्पर्य इस बात से है, कि बपतिस्मा के द्वारा गाड़े जाना एक उपदेश था जिसका प्रचार रोम में किया गया था और जिसे मानकर वहां बहुतेरे लोग अपने पापों से मुक्त हो गए थे। रोमियों 6:6 में लिखा है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। यहां यह शिक्षा हमें मिलती है, कि बपतिस्मा लेने के द्वारा ही पुराना मनुश्यत्व पानी की कब्र के भीतर तक मुर्दे की तरह गाड़ा जाता है और उस कब्र में से बाहर निकलकर मनुष्य एक नया इंसान बन जाता है। कुलुस्सियों 2:12 तथा 1 कुरिन्थियों 10:1-3 से भी हमें यही शिक्षा मिलती है कि बपतिस्मा केवल गाड़े जाकर ही लिया जा सकता है। केवल बाइबल को पढ़ने से ही हमें सच्चाई मालूम हो सकती है। यीशु ने कहा था कि सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना 8:32)

यीशु ने यूहन्ना 4:23, 24 में इस प्रकार कहा था, परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे। क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। यीशु के कहे इन शब्दों से हम यह सीखते हैं कि प्रभु को सच्ची उपासना ही स्वीकार होती है। अर्थात परमेश्वर की उपासना सच्चाई के साथ की जानी चाहिए। यही कारण है कि परमेश्वर की उपासना में हमें बाजे बजाकर उसकी उपासना नहीं करनी चाहिए। वह हमारी, जिन्हें उसने बनाया है, उपासना चाहता है, न कि उन बाजों की जिन्हें मनुष्यों ने अपनी बुद्धि और हाथों से बनाया है।

बाइबल बड़ी ही स्पष्टता से हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर हमारे हृदयों और गलों से निकली आवाजों की उपासना चाहता है। इफिसियों 5:16 के अनुसार, लिखा है, गीत गाया करो। यह काम गला कर सकता है, बाजा नहीं। हमें आत्मा से गाना चाहिए। (1 कुरिन्थियों 14:15)। गला यह काम कर सकता है, एक बाजा नहीं। हमें भजन गाने चाहिए। (इब्रानियों 2:12)। गले से गया जा सकता है, बाजे से नहीं।

इब्रानियों 13:15 के अनुसार, हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। ऐसा गले के द्वारा किया जा सकता है, बाजों के द्वारा नहीं।

हमें यूहन्ना प्रेरित के उन शिक्षाप्रद शब्दों को सदैव याद रखना चाहिए जिनका वर्णन हमें 2 यूहन्ना 9 में इस प्रकार मिलता है, जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता है, उसके पास परमेश्वर नहीं जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी। यदि हम परमेश्वर की उपासना में उस यंत्र के अतिरिक्त जिसे उसने हमें दिया है, किसी और यंत्र का इस्तेमाल करें तो क्या ऐसा करके हम मसीह की शिक्षा में बने रह सकते हैं?

परेशान करने वाली समस्याएं

डेविड रोपर

मुझे शांति और सुलह पसंद है। मैं चाहता हूं कि हर कोई दूसरे हर व्यक्ति से सहमत हो ताकि सभी लोग मिल-जुलकर शांति से रह सकें। इसके साथ ही मैं इस बात को समझता हूं कि यह एक अवास्तविक इच्छा है। जहां भी मानवीय जीव रहते हैं, वहां असहमतियां हो ही जाती हैं। यह बात न केवल संसार में, बल्कि कलीसिया में भी सत्य है। प्रश्न यह नहीं है कि यदि हम सहमत हों तो क्या करें? बल्कि यह है कि जब हम असहमत हों तो क्या करें? जब हमारे अन्दर विचार के मतभेद हों तो हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए?

रोमियों 14:1-15:13 में पौलुस ने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की। रोमियों 12 से आरंभ करते हुए आमतौर पर एक विषय पर कुछ आयतें लेते हुए प्रेरित ने कई विषयों को लिया, परन्तु इस प्रश्न पर चर्चा करने के लिए कि जब सहमत नहीं होते तब हमें अन्य मसीही लोगों के साथ कैसे काम करना चाहिए, इस प्रश्न पर एक अध्याय से अधिक यानी छत्तीस आयतें ली हैं।

इस चर्चा के इतना लम्बा होने के कारण कुछ टीकाकारों ने निष्कर्ष निकाला है कि यहूदी मसीहियों और अन्य जाति मसीहियों के बीच मुख्य समस्याएं थीं और रोमियों के नाम पत्र लिखने का पौलुस का मुख्य कारण यही था। रोम में पौलुस के कई जानने वाले थे (रोमियों 16:3, 5-15)। जिस कारण उसे वहां पाए जाने वाले झगड़े की खबर होगी। परन्तु यह उतना ही नहीं है, जितना पौलुस ने अपनी यात्राओं में कई जगह में तनाव को झेला था, जिसका विवरण हमारे वचन पाठ में दिया गया है। इसलिए उसे उन समस्याओं को रोकने के लिए जो खड़ी हो सकती है, यह निर्देश शामिल करने की आत्मा द्वारा गवाही दी गई थी।

वचन लम्बा है और कई बार इसकी विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए मैंने इसे छोटे भागों में बांटा है जिससे इसे अच्छी तरह समझाया जा सके। इस आरंभिक पाठ में हम पृष्ठभूमि के मसलों पर चर्चा करेंगे और संक्षेप में 1 से 4 आयतों की समीक्षा करेंगे।

स्थिति?

वचन के अपने अध्ययन को आरंभ करने से पहले हमें कुछ चुनौतियों को समझना आवश्यक है, जो हमारे सामने आएंगी। पहली बड़ी चुनौती यह है कि हम उस स्थिति के

बारे में ठीक-ठीक नहीं जान सकते कि पौलुस ने यह चर्चा क्यों की। पौलुस को यह स्थिति स्पष्ट थी और मान लेते हैं कि रोम में उसके पाठकों को भी स्पष्ट था, परन्तु हमें नहीं है। इसमें मांस खाने (14:2, 21), विशेष दिनों को मानने (14:5) और किसी तरह दाखरस पीने की बात (14:21) शामिल है। परन्तु इस बात में सहमति की कमी है कि संक्षेप में पौलुस के दिमाग में क्या था। इसके साथ इस पर भी असहमति जुड़ जाती है कि कौन 'बलवान' भाई था (15:1) और कौन 'निर्बल' भाई (14:1, 2, 15:1)।

कई लोगों का विश्वास है कि रोमियों 14 के सब उदाहरणों में, निर्बल भाई यहूदी मसीही थे, जो अभी भी पुराने नियम की व्यवस्था के अवशेषों से चिपके हुए थे। दिनों के संबंध में वे अभी भी यहूदी कैलेंडर को ही मानते थे। मांस खाने के संबंध में रोम जैसे मूर्तिपूजक समाज में उन्हें पता नहीं था कि बाजार से खरीदा गया किसी भी तरह का मांस कोशर होता था। सुरक्षित ढंग अपनाते हुए वे शाकाहारी बन गये थे। इस ढंग के अनुसार, बलवान भाई अन्य जाति मसीही थे और कुछ एक पौलुस जैसे जागृत यहूदी मसीही।

मुझे यह भी बताना चाहिए कि इस विचार को मानने वाले यह जोर देते हैं कि रोमियों 14 में और 1 कुरिन्थियों 8-10 में ऐसी ही चर्चा में, जो मूर्तियों को बलिदान किए मांस को खाने के विषय में हैं, कोई संबंध है। दोनों वचनों में समानताएं मानने के बावजूद, वे मुख्य अन्तरों की ओर ध्यान दिलाते हैं।

अभी बताया गया ढंग हो सकता है कि सही हो, परन्तु मुझे यह निष्कर्ष निकालने में दिक्कत होती है कि अपने पत्र में यहां पौलुस ने यहूदी मसीहियों को निर्बल समूह और अन्य जाति मसीहियों को बलवान समूह का नाम दिया। इसके अलावा मुझे लगता है कि 1 कुरिन्थियों 8-10 के साथ संभावित संबंध कुछ जल्दी ही टूट जाता है। आखिर पौलुस कुरिन्थुस से लिख रहा था, जहां उसे मसीही लोगों के मूर्तियों को बलिदान किए हुए मांस खाने से पैदा समस्याओं का बार-बार ध्यान दिलाया जाता होगा।

जहां तक मुझे पता है, पुराने नियम के खाने पीने के नियमों को मानने वाले यहूदी लोग कोशर मांस के लिए अन्य जातियों के मांस के बाजार पर निर्भर नहीं थे, बल्कि वे व्यवस्था तथा अपनी परम्पराओं में बताए नियमों के अनुसार स्वयं काटते और तैयार करते थे। इसलिए यह हो सकता है कि मांस खाने से परहेज करने वाले लोग अन्य जाति मसीही ही हों, जो इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि बाजार में बिकने वाला कुछ मांस पहले मूर्तियों को चढ़ाए मांस का हिस्सा था।

ऐसा कोई प्रमाण नहीं हैं जो हमें यह निष्कर्ष निकालने पर बाध्य करता हो कि पौलुस ने बताए इन सभी मुद्दों पर एक समूह को बलवान और दूसरे को निर्बल कहा हो। यह हो सकता है कि उसने यह विषय जान-बूझकर चुना हो जिस पर यहूदी मसीही निर्बल लगते हों (दिनों को मानना) और इस विषय में जिस पर अन्य जाति मसीही अधिक निर्बल लगते हों (मांस न खाना)। ऐसा ढंग हम तुम से आत्मिक रूप में अधिक बलवान है के विचार को निकाल देगा। (यदि हम अपने साथ ईमानदार हैं तो हम में से अधिकतर को यह मानना पड़ेगा कि कई मुद्दों पर हम बलवान हो सकते हैं, परन्तु यह भी हो सकता है कि हम दूसरे मुद्दों पर निर्बल हो।

हम इस पर हठधर्मी नहीं हो सकते कि रोमियों 14:1-15:13 में पौलुस के मन में सही-सही कौन सी स्थिति थी। रिचर्ड ए. बेटे ने लिखा है, सौभाग्य से इस भाग में पौलुस की शिक्षा पर निष्पक्ष समझ के लिए उन मसीही लोगों की सही-सही पहचान होना आवश्यक नहीं है, जो पौलुस के मन में थीं। वचन में से देखते हुए, मैं सम्भावनाओं की

चर्चा करूंगा, परन्तु हमें इस बात में सावधान रहना होगा कि मान्यताओं के आधार पर कोई निष्कर्ष न निकालें।

प्रासंगिकता

एक और सवाल खड़ा होता है कि यदि इसकी कोई प्रासंगिकता है तो हम क्या प्रासंगकिता बना सकते हैं? रोमियों 14 और 15 में गड़बड़ी चाहे कोई भी हो, पौलुस पहली सदी की समस्याओं से निपट रहा था, जो लगता है कि हमारी आज की समस्याओं से अलग नहीं है। क्या इसमें हमारे लिए कोई संदेश है? हां। यदि हर युग के लिए संदेश न होता तो पवित्र आत्मा ने इस वचन को संभावना नहीं था। इक्कीसवीं सदी के लिए इसमें क्या संदेश है?

वर्षों से, मैंने रोमियों 14 का इस्तेमाल कई गतिविधियों और विश्वासों को सही ठहराने के लिए करते सुना है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग जोर देते हैं कि रोमियों 14:1 का अर्थ है कि हमें किसी को भी जो मसीह में विश्वास करता है, स्वीकार कर लेना चाहिए, चाहे वह जो भी विश्वास या व्यवहार करता हो। बहुत बार इस वचन का इस्तेमाल उन नैतिक व्यवहारों को सही ठहराने के लिए किया गया है, जो संदेह के दायरे में है। जब मैं लड़का था, तो मैंने आयत 21 के शब्दों का इस्तेमाल इस प्रकार सुना था जो आप कर रहे हैं, वह मुझे पसंद नहीं है। इससे मुझे ठोकर लगती है, सो पौलुस की शिक्षा के अनुसार आपको ऐसा करना बंद कर देना चाहिए। वचन में से रास्ता बनाते हुए मैं इनमें से कुछ अस्पष्ट प्रासंगिकताओं पर बात करूंगा।

प्रासंगिकता के बारे में शायद सब से महत्वपूर्ण बात जो मैं कह सकता हूं वह यह है कि यह वचन विचार की भिन्नताओं पर व्यवहार करने के ढंग से निपटता है। अब उसे जो विश्वास में निर्बल है, ग्रहण कर लो; परन्तु उसके विचारों पर निर्णय देने के लिए नहीं (आयत 1)। उसके विचारों पर वाक्यांश का अनुवाद एक यूनानी शब्द से किया गया है, जो इस आयत में, छोटी-छोटी बातों की चिंता का संकेत देता है। लेखक इस विचार को व्यक्त करने के लिए कि यह वचन विचार के मामलों के संबध में है, जिसमें आकस्मिक गैर अनिवार्य गौण मसलों नगण्य मसलों और महत्वहीन मसलों सहित कई शब्दों और वाक्यांशों का इस्तेमाल करते हैं।

नये नियम की मसीहियत की बहाली के लिए समर्पित लोग हमेशा से विश्वास की बात (जो वचन में स्पष्ट सिखाई गई और विचार की बात जिसके विषय में वचन कोई स्पष्ट निर्देश नहीं देता) में अन्तर को मानते हैं। बीते समय में विश्वास एकता के मामलों में, विचार स्वतंत्रता के मामलों में, और सब बातों, प्रेम में एक उद्देश्य सुना जाता था। रोमियों 16:17 में पौलुस ने समझाया कि हमें विचार की बातों पर असहमति से कैसे निपटना चाहिए। हमारा वर्तमान वचन पाठ इस बात पर ध्यान देता है कि हमें विचार की बातों में कैसे व्यवहार करना चाहिए।

मैंने जो भी टीका देखा है उसमें इस बात पर सहमति पाई जाती है कि रोमियों 14:1-15:13 की प्रासंगिकता विचार की बातों से मेल खाती होनी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, डग्लस जे. ने लिखा है कि, यहां सब मुद्दों के लिए जिस सहनशीलता की मांग पौलुस कर सकता है, वह हम नहीं दे सकते। हमें रोमियों 14:1-15:13 वाली सहनशीलता को वैसे ही मुद्दों पर लागू करने के लिए जिनकी बात यहां पौलुस ने की, सावधान रहना आवश्यक है। इसके साथ अधिकतर लेखक शिक्षा संबंधी तथा नैतिक मुद्दों की अपनी

सूचियों सहित जिन्हें वे विचार की बातें मानतें हैं, का विरोध नहीं कर सकते। उनकी सूचियों में शिक्षा संबंधी मुद्दे हैं, जैसे डुबकी द्वारा बपतिस्मा होना चाहिए या नहीं और नैतिक मुद्दे जैसे जुआ।

रोमियों 14 को लागू करते हुए लोगों के लिए वह मानना आम बात है कि इसे इन्होंने साबित करना हो। इसलिए वे मान लेते हैं कि यह या वह मुद्दा विचार की बात है और फिर इस पर रोमियों 14 को लागू करते हैं। रोमियों 14 के नियमों को किसी भी मुद्दे पर कठोरता से लागू कराने से पहले, यह पता लगाना मुश्किल है कि वह मुद्दा विचार ही की श्रेणी में ही आता हो। यह आसान नहीं है। कई मसीही अधिकतर मुद्दों को विश्वास के मामले मानते हैं, जबकि अन्य मसीही यह मानते हैं कि वे विचार के मामले हैं।

क्या इसका अर्थ यह है कि रोमियों 14:1-15:13 आज हमें कुछ नहीं कहती? कदापि नहीं। कलीसिया में कई बार हम विश्वास के मामलों सहित कई मुद्दों पर असहमत होते हैं, परन्तु कई बार हम उन मामलों में भी असहमत होते हैं, जिनमें अधिकतर भाग लेने वालों को (कुड़कुड़ाते हुए) मानना आवश्यक है कि वे विचार के क्षेत्र में आते हैं। अपने जीवन काल में, मैंने कुछ एक शिक्षा संबंधी मुद्दों को कलीसियाओं में फूट डालते देखा है। इसी दौरान मैंने विचार के मामलों पर मण्डलियों की एकता सैकड़ों बार खत्म होते देखी है।

उदाहरण के लिए, किसी विशेष कार्य के लिए कलीसिया के भण्डार में से धन खर्च करने का निर्णय लिया जाता है। और कुछ लोग मजबूती से (और शोर मचाकर) विरोध करते हैं कि यह प्रभु के धन की बेशर्मी से फिजूल खर्ची है। फिर, मण्डली के ऐल्डर यह निर्णय लेते हैं कि नये प्रचारक को लाना चाहिए और जो पुराने प्रचारक को पसंद करते हैं, वे विद्रोह करने लगते हैं। शायद आप ऐसे प्रश्नों की जिन्हें दोनों पक्ष विचार के क्षेत्र का झगड़ा मानते हो, असहमति के अपने उदाहरण दे सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में ही रोमियों 14 सबसे अधिक सहायक है। यह वचन कलीसिया में पाई जाने वाली असहमति का हर समाधान नहीं कर सकता, परन्तु यदि इसे माना जाए तो यह उनमें से कईयों का समाधान कर सकता है।

इतना कहने के बाद मैं मानता हूं कि हम इस वचन से कुछ सामान्य नियम ले सकते हैं, जो हमें किसी भाई के साथ किसी भी समय असहमत होने पर अगुआई देते हैं। इसे विचार का मामला मानें या विश्वास का प्रश्न। ऐसे भी नियम हैं, जो अन्य लोगों के साथ असहमत होने पर कभी भी सहायक हो सकते हैं, स्थिति चाहे जो भी हो। यहां मिलने वाले नियम न केवल कलीसियाओं की सहायता करते हैं, बल्कि विवाहों, परिवारों और समुदायों में भी सहायक हो सकते हैं। रोमियों 14 के अपने अध्ययन को पूरा करने के बाद मैं कई बहु-उद्देश्य नियम दूंगा जिनमें कुछ अंतिम टिप्पणियां और सुझाव होंगे।

मूल प्रस्तावना (14:1-4)

अब हम अपने वचन पाठ का परिचय देते हैं। यह वचन स्वाभाविक रूप से तीन भागों 14:1-12; 14:13-23; और 15:1-13 में बंट जाता है। इन भागों के मुख्य विचारों को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है: (1) एक-दूसरे को ग्रहण करो (14:1), (2) एक दूसरे को सुधारो (देखें 14:19) और (3) एक-दूसरे को प्रसन्न करो (देखें 15:2)। इस पाठ का शेष भाग 14:1-4 पर केन्द्रित होगा। इन आयतों में हम पूरे भाग की मूल प्रस्तावना (जो पहले भाग का विषय भी है) देखेंगे। वचन का आरंभ होता है, जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो, (14:1क)। बाद में इस भाग के अंत में, हम पढ़ेंगे, इसलिए

जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिए तुम्हें ग्रहण किया है वैसे ही तुम भी एक-दूसरे को ग्रहण करो (आयत 15:7)। इस पाठ के शेष भाग में हम पहले पौलुस द्वारा बताई असहमति को देखेंगे और फिर विचार करेंगे कि एक-दूसरे को ग्रहण करने का क्या अर्थ है।

दूसरों के साथ जीवन

फ्रेंक पैक

क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है और न कोई अपने लिए मरता है (रोमियों 14:7)। इस कथन में कष्ट की समस्या में एक और अन्तरदृष्टि मिलती है। अधिकतर कष्ट इसलिए होता है क्योंकि लोग समूहों में मिलकर रहते हैं। इस कारण एक के साथ होने वाली घटना दूसरों के जीवन को भी प्रभावित करती है।

विचार करें कि भीड़ भरे राजमार्ग के साथ-साथ नशे में धुत कोई शराबी तीव्र गति से गाड़ी चलाए तो क्या होगा। बहुत से दूसरे लोग उस सड़क से जा रहे हैं जो नियमों का पालन और अपनी समझ का पूरा इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि वे लोग नशे में नहीं है। वे सड़क के नियमों का पालन करते हुए अपनी साइड पर गाड़ी चला रहे हैं। परन्तु, यदि शराबी ड्राइवर गलत साइड में घुसकर सीधा एक कार के आगे आ जाए तो उस शराबी की आपराधिक लापरवाही से किसी परिवार के सदस्यों की मृत्यु हो सकती है या उन्हें चोटें आ सकती हैं।

लोगों के इतनी बड़ी संख्या में एक दूसरे के इतना निकट रहने के कारण किसी व्यक्ति की गलती से दूसरे आसानी से प्रभावित हो सकते हैं। आप कह सकते हैं, दूसरों की गलतियों के परिणामों में मुझे क्यों घसीटा जा रहा है? मैं उनकी गलतियों के लिए कष्ट क्यों उठाऊं? मान लीजिए कि आप ऐसे निर्जन स्थान पर जा सकते हैं जहां किसी भी प्रकार से संसार की कोई बीमारी आपको प्रभावित न कर सके। इसके साथ ही आपको उन आशिषों और अवसरों से भी वंचित होना पड़ेगा जो दूसरों के योगदान से आपको मिलते हैं। हमारे सबसे अच्छे अनुभवों में दूसरों के साथ संगठन की बात हैं जीवन की आवश्यक वस्तुओं के लिए भी हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं। बिना परस्पर निजी संबंधों के हमारे जीवन कितने दयनीय होंगे। हम इक्ट्ठे रहने में शामिल जोखिमों का इंकार करके जीवन की आशिषों और सुअवसरों को स्वीकार नहीं कर सकते।

चरित्र पर कष्ट का प्रभाव

कष्ट के अर्थ में एक और अन्तरदृष्टि इस तथ्य में है कि पीड़ा उपचार के लिए भी हो सकती है अर्थात, कष्ट उठाने वाले को यह और अच्छा बना सकती है। पाप सारे कष्ट की व्याख्या नहीं है, परन्तु अधिकतर इसका कारण ही होता है।

मनुष्य ने अपने आपको यह सोचकर धोखा दिया है कि वह भला है और उसे किसी की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उसे इस बात का अहसास नहीं है कि वह निर्धन, अभागा, नंगा और आत्मिक रूप से अंधा है। पवित्र परमेश्वर के सामने, जो अधर्म को सहन नहीं कर सकता, मनुष्य बुरा, हठी और घमण्ड से फूला हुआ है। एक विद्रोही बालक की तरह परमेश्वर के सामने समर्पण करने और उसके उद्देश्यों के योग्य बनने के लिए पापी का

टूटा मन लेकर आना जरूरी है। जब तक किसी का जीवन ठीक-ठाक चलता है, उसे अपनी गलती और पाप को छोड़ने का कोई कारण दिखाई नहीं देता; यह पाप का एक धोखा है। आमतौर पर जब तक कोई मुश्किल में नहीं पड़ता तब तक उसे अपने आप में अपने अपर्याप्त होने की बात समझ नहीं आती। केवल तब तक ही उसे अपने आत्मसंतोष से घबराहट होती है और अपनी वास्तविक आत्मिक स्थिति का पता चलता है। इस अर्थ में, तंगहाली उस व्यक्ति को जगाने का काम कर सकती है, जो ना समझी से पाप में जीवन व्यतीत कर रहा था, ताकि उसे अपने खोए होने और अपने लिए परमेश्वर की आवश्यकता का पता चल सके।

आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते होंगे जो तब तक परमेश्वर की ओर मुड़ने और उसकी इच्छा पूरी करने से इंकार करता रहा जब तक उसने कोई कष्ट नहीं सहा हो। बौद्धिक रूप से उसे बहुत पहले पता था कि उसे सुसमाचार को मान लेना चाहिए। कोई भी यह दावा नहीं करेगा कि दुख अपने आप में अच्छा है, परन्तु दुख के समय जो अच्छी बात है वह यह है कि इस दौरान कोई ऐसा अवसर मिल जाता है जिससे कि वह व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपने को समर्पण कर देता है। दुख व्यक्ति से यह मनवा सकता है कि उसके मार्ग कितने गलत हैं और छुटकारो के लिए उसे परमेश्वर के अनुग्रह की कितनी आवश्यकता है।

दुख में दुखी व्यक्ति के चरित्र और आत्मा को सुन्दर और भद्र बनाने की शक्ति है: और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है (इब्रानियों 12:11)। मुश्किलों से हमें परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ में नये स्रोतों का पता चलता है। हो सकता है कि जीवन हमारे लिए बड़ा सुखद रहा हो। अपने महत्व की ही भावना से भरपूर, हम जब तक अपनी इच्छा के अनुसार चलते गए, जब तक हमें किसी दुखद अनुभव से यह पता न चला कि निराशा के कारण हम कितने निर्बल हैं। ऐसे अनुभव से सार्थक जीवन जीने की योग्यता आती है। कष्ट, विपत्ति, कलेश या दुख न होता तो हमें साहस रहने, धैर्य रखने, अपना इंकार करने और दया करने की चुनौती न मिलती; क्योंकि चरित्र के ये गुण दुख के वातावरण में सबसे अधिक बढ़ते हैं। यदि आप कहें कि, क्यों? तो मैं इसके आगे उत्तर नहीं दे सकता। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि परमेश्वर ने संसार को ऐसे ही बनाया है, और वह बेहतर जानता है।

मसीह का उदाहरण

पाप से छुटकारे के लिए कष्ट आवश्यक था, क्योंकि बिना क्रूस के क्षमा हो ही नहीं सकती थी। मसीह ने शांतिपूर्ण ढंग से और बड़े साहस से बुराई पर विजय पाने की बात जानकर दीनता और लज्जा को सहने का बहुत ही शानदार उदाहरण दिया है। परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया (2 कुरिन्थियों 5:19क)। परमेश्वर अपने प्रिय पुत्र अर्थात देहधारी हुए, परमेश्वर पुत्र के कष्ट के बिना हमें नहीं कह सकता था कि मैं तुम्हें क्षमा करता हूं। मृत्यु और बुराई की शक्तियों पर विजय पाकर और अन्त में छुड़ाए हुओं की विजय सुनिश्चित करके पुनरुत्थान में पुत्र ने कितनी बड़ी विजय पाई है। यह अहसास होने पर कि जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था वह वही है जिसने कहा था जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है (यूहन्ना 14:9)। हमें पता चलता है कि मनुष्य की आत्मा की पीड़ा या कष्ट उसके ज्ञान या समझ से कहीं अधिक हैं।

पतरस प्रेरित ने मसीह के कष्ट में हमारे लिए यह संदेश पाया था:

क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो इसमें क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था (1 पतरस 2:20-23)।

यीशु के मार्ग पर चलकर कष्ट से बचने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। परमेश्वर और उसके पुत्र ने मुझे मेरे पापों से छुड़ाने के लिए बहुत कष्ट सहा है। यदि क्रूस की लज्जा को परमेश्वर महिमा और विजय में बदल सकता है, तो वह कष्ट और विपत्ति के क्रूसों को महिमा और सुन्दरता के मुकुटों में बदलने में भी मेरी सहायता कर सकता है।

उत्तर का एक भाग स्वर्ग है

मनुष्य के कष्ट के संबंध में एक अंतिम बात कहनी आवश्यक है, और वो है स्वर्ग। क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा कलेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है (2 कुरिन्थियों 4:17)। पृथ्वी पर मानवीय कष्ट की पूरी कहानी समझी नहीं जा सकती। कठिन परिश्रम और आंसुओं से भरे इस जीवन के बाद आनन्द का राज्य है। वहां हमारी आंखों से प्रत्येक आंसू पोंछ डाला जाएगा और हर कष्ट आनन्द में बदल जाएगा।

यीशु ने क्रूस का बोझ उठाया ताकि मुझे मेरा घर मिल जाए। प्रेरितों और शहीदों ने कारावास और सताव भोगे ताकि हमारे लिए अनन्त जीवन का शुभ समाचार रहे। जब मैं अपनी आंखें उस नगर की ओर लगाकर जिसका बनाने वाला और निर्माता परमेश्वर है, घर को जाता हूं तो मुझे मेरा बोझ हल्का होता लगता है। मैं इस जीवन की निराशाओं और संघर्षों के आगे देख सकता हूं और जानता हूं कि सबसे अच्छा तो अभी आने वाला है।

बपतिस्मा

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

बपतिस्मा लेना इसलिए बड़ा ही ज़रूरी है क्योंकि बपतिस्मा लेने से ही एक व्यक्ति मसीह की कलीसिया में शामिल होता है। "बपतिस्मा" वास्तव में एक यूनानी भाषा का शब्द है। बाइबल के अनुसार, बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य को जल के भीतर गाड़ा या दफ़न किया जाता है। "बपस्तिमा" शब्द का वास्तव में अर्थ ही यही है, यानी गाड़े जाना। इसका अर्थ न तो छिड़काव करना है और न ही उन्डेलना है। यदि कोई इस यूनानी शब्द का अर्थ न भी समझे, तौभी बाइबल से पढ़कर हम जानते हैं कि बपतिस्मा लेने के द्वारा एक व्यक्ति को जल के भीतर गाड़ा जाता है। मन फिराकर पानी के भीतर गाड़े जाने का अभिप्राय इस बात से है कि इस प्रकार मनुष्य के पुराने जीवन का अंत हो चुका है। मनुष्य, बपतिस्मा लेने के द्वारा, जल के भीतर गाड़ा जाता है, यह दिखाता है कि पुराना व्यक्ति मर चुका है और जल में से बाहर निकलकर उस व्यक्ति का एक नया जन्म होता है। उसे मसीह में होकर एक नया जीवन मिल जाता है जिसमें वोह एक नए जीवन की चाल

चलता है। (रोमियों 6:3-6; कुलुस्सियों 2:12)।

बाइबल से हम देखते हैं कि जब लोग बपतिस्मा लेते थे तो बपतिस्मा लेने के लिए वे सब उस स्थान पर जाते थे जहां अधिक जल होता था, क्योंकि जल में गाड़े जाने के लिए अधिक जल की आवश्यकता होती है। (यूहन्ना 3:23; मरकुस 1:4-5; प्रेरितों 8:36)। यदि बपतिस्मा पानी छिड़ककर दिया जाना सम्भव होता तो बपतिस्मा देनेवाला व्यक्ति किसी बर्तन में पानी लेकर लोगों के पास चला जाता और सब पर छिड़काव कर देता। परन्तु परमेश्वर के वचन की शिक्षा के अनुसार बपतिस्मा केवल जल के भीतर गाड़े जाकर ही लिया जाता है। जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेने के द्वारा यह व्यक्त किया जाता है कि जिस व्यक्ति ने बपतिस्मा लिया है वोह पाप के पुराने जीवन के लिए मर गया है, और गाड़ा जा चुका है और एक नए जीवन की चाल चलने के लिए पानी की कब्र में से बाहर आ गया है।

बपतिस्मा किसे लेना चाहिए? बाइबल के अनुसार, बपतिस्मा उन्हीं लोगों को लेना चाहिए जो मसीह में विश्वास लाकर अपना मन फिराते हैं। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। उन्हें बपतिस्मा लेना चाहिए जो मसीही बनने और मसीह का अनुसरण करने का निश्चय करते हैं। छोटे बच्चे ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना बिल्कुल गलत बात है। कुछ लोग ऐसा करते हैं। परन्तु ऐसी शिक्षा न तो यीशु मसीह ने दी है और न ही उसके प्रेरितों ने। यह मुनष्यों की बनाई हुई रीति है। किसी भी छोटे बच्चे को बपतिस्मा देने की आवश्यकता नहीं है। छोटे बच्चों में पाप नहीं है। बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए लिया जाता है। (मत्ती 18:2-4; 19:13-15; रोमियों 9:11; 1 कुरिन्थियों 14:20; व्यवस्था. 1:39)। यदि कोई छोटा बच्चा मर जाता है, तो वोह स्वर्ग में जाएगा, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का ही है।

कुछ लोगों का मत है कि छोटे बच्चे अपने जन्म से ही पापी होते हैं; इसलिए उन्हें बपतिस्पा देना चाहिए, ताकि उन्हें उस पाप से मुक्ति मिल जाए जो आदम से उन्हें मीरास में मिला है, और इसके लिए वे इफिसियों 2:3 और भजन. 51:5 का हवाला देते हैं। परन्तु जब पौलुस ने उन्हें जो इफिसुस में रहते थे लिखकर कहा था कि वे "स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे" तो उसके कहने का तात्पर्य यह नहीं था कि वे अपने जन्म से ही पापी थे, या वे पापी जन्मे थे। किसी के "संतान" होने का अभिप्राय इस बात से है कि उस व्यक्ति में वही बातें हैं जिनकी वोह संतान हैं। (मरकुस 3:17; यूहन्ना 12:36; प्रेरितों 4:36; 1 थिस्सलुनीकियों 5:5; इफिसियों 2:2; 5:6-8)। अर्थात इफिसुस में अन्य लोगों की ही तरह वे भी पाप में अपना जीवन बिता रहे थे। स्वभाव का अभिप्राय जन्म से नहीं है। जिस परिस्थिति में कोई व्यक्ति रहता है वही उसका स्वभाव बन जाता है। (1 कुरिन्थियों 11:14; रोमियों 2:14)। जिस प्रकार के माहौल या लोगों के बीच में इफिसुस के लोग रह रहे थे, वैसा ही उनका स्वभाव बन गया था। ऐसे ही भजन. 51:5 में दाऊद के कहने का अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि वोह अपने जन्म से ही एक पापी है। पर वोह कह रहा है, कि पाप उसके जन्म लेने से पहले ही से विद्यमान था, और जब वोह उत्पन्न हुआ था उस समय भी पाप वर्तमान था। अर्थात, मनुष्य का जन्म पृथ्वी पर एक ऐसे वातावरण में होता है जहाँ सब तरफ पाप ही पाप है; और बड़ा होकर इसलिए प्रत्येक बालक स्वयं के पाप के कारण पापी बन जाता है। (यशायाह 48:8; 1 शुमुएल 20:30)।

बपतिस्मा लेने का विशेष उद्देश्य पापों की क्षमा प्राप्त करने से है। एक नन्हें बालक को इसलिए बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। जो व्यक्ति बपतिस्मा लेता है, उसे इस बात की समझ होनी चाहिए कि वोह क्या कर रहा है। बिना समझ के, मात्र पानी में बपतिस्मा लेने के नाम से चले जाना व्यर्थ होगा। क्योंकि महत्व जल का नहीं है, किन्तु परमेश्वर की आज्ञा मानने का है। (1 पतरस

3:21)। इसलिए नासमझ छोटे बालकों को बपतिस्मा देना बिल्कुल व्यर्थ बात है। इससे वास्तव में बाद में बड़ी ही दिक्कत भी होती है, क्योंकि जब वे बच्चे बड़े हो जाते हैं और जब हकीकत में उन्हें बपतिस्मा लेने की ज़रूरत होती है तो वे यह कहकर टाल देते हैं कि उनका बपतिस्मा तो हो चुका है। सो याद रखें, कि बपतिस्मा उन लोगों को लेना चाहिए जो यीशु मसीह में विश्वास लाते है, और पाप से अपना मन फिराते हैं और मसीह के अनुयायी बनना चाहते हैं। (प्रेरितों 8:12, 36; 16:33; 18:8)।

बपतिस्मा क्यों लेना चाहिए? इस बात पर बाइबल में कई जगह प्रकाश डाला गया है, अर्थात, प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा मानने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए (मत्ती 28:18,19), और पापों की क्षमा पाने के लिए (प्रेरितों 2:38), पापों को धो डालने के लिए (प्रेरितों 22:16; इब्रानियों 10:22); पवित्रात्मा प्राप्त करने के लिए (प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:15; 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13, 14), उद्धार पाने के लिए (मरकुस 16:15, 16; 1 पतरस 3:21), मसीह के साथ एक होने के लिए (रोमियों 6:3-6), मसीह को पहन लेने के लिए (गलतियों 3:26, 27), मसीह की कलीसिया अर्थात उसकी देह में शामिल होने के लिए (इफिसियों 1:22-23; प्रेरितों 2:41, 47), पवित्र बनने के लिए (इफिसियों 5: 25-27), और नया जन्म प्राप्त करने तथा पवित्रात्मा के द्वारा नया बनाए जाने के लिए (यूहन्ना 3:5; तीतुस 3:5)।

यदि कोई मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपना मन न फिराए, तो बपतिस्मा लेने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। केवल दिखाने के लिये, या किसी के मन की संतुष्टि के लिए किसी के कहने से बपतिस्मा ले लेने से किसी को भी कोई आत्मिक लाभ नहीं मिलेगा। (1 पतरस 3:21; यूहन्ना 3:3-8)। जब कोई प्रभु की आज्ञा मानकर, प्रभु के कहे अनुसार, अपने पापों की क्षमा के लिये सच्चे मन से बपतिस्मा लेता है, तो वोह अपने विश्वास को व्यक्त करता है। (प्रेरितों 22:16; रोमियों 10:13), और सच्चे मन से अपने आप को परमेश्वर के हाथों में सौंपता है (1 पतरस 3:21)। परमेश्वर के वचनानुसार, बपतिस्मा लेने पर ही मनुष्य का सम्पर्क मसीह की मृत्यु और उसके बहाए लहू के साथ स्थापित होता है। (रोमियों 6:3-6)। बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य न केवल मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने की समानता में ही उसके साथ एक हो जाता है, पर उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ एक हो जाता है। (1 परतस 3:21)। यह एक ऐतिहासिक सच भी है कि बपतिस्मा ही एक ऐसी चीज़ है जिसके कारण एक मसीही और एक ग़ैर मसीही में फ़र्क किया जाता है, अर्थात जिसका बपतिस्मा हुआ है केवल उसे ही एक मसीही माना जाता है।

बपतिस्मा लेने से पहले किसी व्यक्ति का विश्वास मसीह में हो सकता है, और वोह अपने आप को यद्यपि मसीह का एक अनुयायी भी मानता हो, परन्तु बाइबल के कथनानुसार न तो वोह मसीह की समानता में उसके साथ एक हुआ है और न वोह मसीह के भीतर है (रोमियों 6: 3-6; गलतियों 3:27)। बपतिस्मा लेना एक विवाह के बन्धन में बंधने के समान है। क्योंकि बपतिस्मा लेते समय मनुष्य मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करता है, और उसे अपना प्रभु मानता है (प्रेरितों 8:36-38; 1 तीमुथियुस 6:12-13; 1 यूहन्ना 4:2-3, 15; मत्ती 10:22-33; लूका 12:8-9; रोमियों 10:9-10)। बाइबल की शिक्षा अनुसार यदि किसी का बपतिस्मा नहीं हुआ है, तो वोह मसीह के बाहर आशा-रहित है। (इफिसियों 2:12)। किन्तु जो लोग मसीह में हैं, उसमें उन्हें सब प्रकार की आत्मिक आशीषें प्राप्त हैं (इफिसियों 1:3), अर्थात, उद्धार (2 तीमुथियुस 2:10) और पापों की क्षमा (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14)। बाइबल के अनुसार, जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तो उसी समय परमेश्वर उसे संसार से अलग करके मसीह में मिला लेता है। (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27)।

जैसा कि हम पहले भी देख चुके हैं, बपतिस्मा केवल उन्हीं लोगों को लेना चाहिए जो मसीह में विश्वास लाते हैं (मरकुस 16:16), और पाप से अपना मन फिराते हैं (प्रेरितों 2:38), और जो मसीह में होकर अपना जीवन व्यतीत करने का निश्चय करते हैं (1पतरस 3:21)। यदि आप यीशु मसीह में यह विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, तो आपको चाहिए कि आप उसमें बपतिस्मा लेकर उसे पहन लें और एक मसीही और मसीह की कलीसिया के सदस्य बनें। सो आप को क्या करना चाहिए? आपको किसी ऐसे व्यक्ति या सुसमाचार प्रचारक को सम्पर्क करना चाहिए जो यह मानता है कि बपतिस्मा लेने का अर्थ पानी के भीतर गाड़े जाना है, और उससे बपतिस्मा लें। किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात पर विश्वास न करें जो आप से यह कहे कि बपतिस्मा लेना केवल एक धार्मिक संस्कार है और उसका उद्धार पाने से कोई सम्बन्ध नहीं है। केवल बाइबल पर ही विश्वास करें (प्रेरितों 2:38; 22:16; मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। केवल वही मानें जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने बाइबल में दी है।

बाइबल में यह नहीं बताया गया है कि बपतिस्मा लेते समय किन शब्दों को कहा जाना चाहिए, अर्थात जो व्यक्ति बपतिस्मा दे रहा है उसे कुछ कहना चाहिए या नहीं। विशेष बात यह है कि जब परमेश्वर के वचन को सुनकर कोई जन यह निश्चय कर ले कि अब उसे बपतिस्मा लेना चाहिए, तो उसे तुरन्त प्रभु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये और मसीह को पहन लेने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। ख़ास बात यह है कि आप यीशु में अपने सारे मन से विश्वास करके ऐसा करें। बपतिस्मा लेने के लिये आप किसी ऐसे स्थान पर जा सकते हैं जहां अधिक मात्रा में पानी है, जैसे कोई तालाब या नदी, या किसी बड़े टब में पानी भर के भी बपतिस्मा उसमें लिया जा सकता है। जो व्यक्ति बपतिस्मा देता है वोह इस प्रकार कहकर बपतिस्मा दे सकता है, "मैं आप के इस विश्वास पर कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, आपको पिता, और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा देता हूं।" (मत्ती 28:19; प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मा देनेवाले व्यक्ति को उसे जो बपतिस्मा ले रहा है पूरी तरह से पानी के भीतर गाड़ देना या दफ़न कर देना चाहिए और फिर तुरन्त उसे ऊपर उठाकर खड़ा कर देना चाहिए ताकि वोह पानी में से बाहर आ सके। इसके बाद परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये एक प्रार्थना की जा सकती है।

बपतिस्मा ले लेने के बाद, आपको यह समझना चाहिए कि अब आप परमेश्वर की संतान है (1पतरस 2:2)। आप के भीतर अब परमेश्वर का आत्मा बास करता है। (1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:25-27; 1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20)। अब आपको मसीह ने अपनी उस कलीसिया में मिला लिया है जिसके लिये उसने लहू बहाया था। (मत्ती 16:18; प्रेरितों 20:28)। आपका नाम अब उस जीवन की पुस्तक में लिखा जा चुका है जो परमेश्वर के पास है (प्रकाशित. 20:15)। आपके पाप धोए जा चुके हैं (प्रेरितों 22:16)। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि बपतिस्मा लेने के बाद आप कभी पाप करेंगे ही नहीं (रोमियों 7:15-25)। परीक्षाएं आप के सामने हमेशा आएंगी। परन्तु क्योंकि अब आप एक मसीही हैं, आपको पापों की क्षमा के लिये बार-बार बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप से कोई गलत काम हो जाता है, तो आप मन फिराकर परमेश्वर से प्रार्थना करके क्षमा मांग सकते हैं। (1 यूहन्ना 1:6-10)। आपको चाहिए कि आप ऐसे लोगों के साथ परमेश्वर की आराधना-उपासना करें जो आप की ही तरह केवल परमेश्वर के वचनानुसार ही चलना चाहते हैं। क्योंकि अब आप एक मसीही हैं, तो आपका आचरण और चाल-चलन भी एक मसीही का सा होना चाहिए।